सुभावती देवी: किचन गार्डन पर एक केस स्टडी

स्थिति विश्लेषण / समस्या कथन:- श्रीमती सुभावती देवी पूर्वी उत्तर प्रदेश में गोरखपुर जिले के जंगल कौड़िया ब्लॉक के राखुखोर गाँव में सात सदस्यों के छोटे परिवार के साथ रहती हैं। पहले उनका परिवार ज्यादातर मौसमी सब्जियों और फलों के लिए बाजार पर निर्भर था।

योजना, कार्यान्वयन और समर्थन:- श्रीमती सुभावती देवी स्वयं सहायता समूहों के साथ सक्रिय रूप से जुड़ी हुई हैं और पिछले 2 वर्षों से काम कर रही हैं। यद्यपि उनका पिछला अनुभव अधिक सफल नहीं था, लेकिन वह MGKVK द्वारा आयोजित किचन गार्डन तकनीकी पर प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल हुई थी और उन्हें प्रदर्शन का लाभ भी मिला था। कार्यक्रम में उनकी सहभागिता का कारण उसके परिवार के आहार की प्रकृति थी। सुभावती देवी ने उल्लेख किया कि इस कार्यक्रम में शामिल होने से पहले उनके परिवार के आहार में विविधता का अभाव था और ज्यादातर बाजार की उन सब्जियों एवं फलों को खरीदते थे, जो वे अपने भूमि पर उगा सकते थे। श्रीमती सुभावती देवी ने आगे कहा कि भोजन के लिए बाजार पर निर्भर रहना महंगा पड़ सकता है; यह सोचकर, उनका परिवार बाजार के माध्यम से आहार का विस्तार नहीं कर सका।

आउटपुट:- महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केंद्र के प्रथम पंक्ति प्रदर्शन योअनान्तर्गत किचन गार्डन स्थापित करने हेतु गुणवत्तायुक्त बीज वितरित किया गया और नलकूपों या जहां परिवार अपशिष्ट जल का निपटान किया जाता है, के पास किचन गार्डन बनाने में मदद कर किया गया। केवीके द्वारा स्थापित किचन गार्डन का मुख्य उद्देश्य प्रदर्शन कार्यक्रम में सहभाग करने वाले परिवारों के आहार में खाद्य विविधता बढ़ाने और बाजार की सब्जियों एवं फलों पर उनकी निर्भरता को कम करना है।

परिणाम:- श्रीमती सुभावती देवी के अनुसार, किचन गार्डन उनके परिवार और उनके गाँव के लिए प्रभावकारी रहा है। बीज का प्रारंभिक बैच एक सुंदर, विविध, बगीचे में विकसित हो गया है। इस उद्यान में हल्दी, लहसुन, प्याज, पालक, पपीता, तोरई, मिर्च, बैंगन, हरी पत्तेदार सब्जी और टमाटर शामिल हैं। उन्होंने केले, आम, अमरूद, नींबू और लीची जैसे फलों के पौधे लगाये। श्रीमती सुभावती ने गर्व से दावा किया कि बगीचे में उगाए गए खाद्य पदार्थों का उपयोग उनके घर के भीतर व्यंजनों में किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त, उन्होंने बताया कि किचन गार्डन से उत्पादित खाद्य पदार्थ पूरे परिवार के लिए समान रूप से वितरित किए जाने के बाद भी पर्याप्त मात्रा से अधिक हो रही। यह तकनीकी बाजार पर भी निर्भरता को कम करने में सफल रहा है।

प्रभाव:- तय कार्यक्रम के अनुरूप श्रीमती सुभावती और सभी प्रतिभागियों को पूरे गाँव के भीतर खाद्य विविधता बढ़ाने के लिए अन्य घरों के साथ बीज का आदान-प्रदान करने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। बीज विनिमय और किचन गार्डन का उचित रखरखाव इस तकनीकी को निकट भविष्य के लिए टिकाऊ बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण सिद्ध होगा। श्रीमती सुभावती देवी इस बेहतर किचन गार्डन तकनीकी से बहुत खुश हैं और जिले की अन्य खेतीहर महिलाओं के लिए उदाहरण प्रस्तुत कर रही हैं।